उन्हें डर है कि वे इतिहास की विषयवस्तु न बन जायें

कृष्णगोविन्द सिंह

संघ परिवार ने शिक्षा सहित समूचे सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को भगवा रंग में रंग देने के किसी भी अवसर को हाथ से नहीं निकलने दिया। ऐसा ही एक बड़ा अवसर 1977 में आया था, जब इमर्जेन्सी के अत्याचारों से त्रस्त जनता ने प्रबल बहुमत के जरिये जनता पार्टी को सरकार में बैठाया। भाजपा का पुराना रूप जनसंघ जनता पार्टी का एक महत्वपूर्ण घटक था। एक योजना के तहत संघी "थिंक टैंकों" ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को एक "इतिहास विद्वान" की ओर से पत्र भिजवाया। पत्र में एन.सी.ई.आर.टी. के इतिहास पाठ्यक्रम पर भारी असन्तोष जाहिर करते हुए मार्क्सवादी इतिहासकारों को पानी पी-पीकर कोसा गया था। बिचारे मोरारजी देसाई सत्ता में बने रहने की मजबूरी के शिकार थे। पत्र में दिये गये मूर्खतापूर्ण एवं प्रतिक्रियावादी सुझावों को कूड़ेदान के हवाले करने के बजाय रामशरण शर्मा, विपिन चन्द्रा और रोमिला थापर जैसे विश्व प्रसिद्ध इतिहासकारों की पाठ्यपुस्तकों को हटा दिया गया। लेकिन उस समय यह अभियान बहुत दूर तक नहीं पहुंच सका क्योंकि घटक दलों की कुत्ताघसीटी के चलते जनता पार्टी की सरकार ढाई साल में ही गिर गयी।

लेकिन 1998 में जब भाजपा के नेतृत्व में केन्द्र में गठबन्धन सरकार बनी तो नये सिरे से यह मुहिम शुरू हुई। इस बार पूरी ताकत के साथ। तमाम शैक्षणिक एवं अकादमिक संस्थानों में चुन-चुनकर केसरिया ब्रिगेड के "बौद्धिकों" को भरा जा चुका है। इनकी मदद से सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के तमाम पाठ्यक्रमों को नीचे से लेकर ऊपर तक केसरिया रंग दिया जा रहा है। भाजपा शासित राज्यों में यह मुहिम काफी जोर पकड़ चुकी है।

भाजपा शासित राज्यों में चल रही मुहिम का पर्दाफाश छह-सात वर्षों पूर्व स्वयं एन.सी.ई.आर.टी. ने ही किया था जो आज स्वयं स्कूली शिक्षा के भगवाकरण का औजार बन चुकी है। पी.वी.नरसिंह राव के शासन के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने दो चरणों में देश भर के राज्यों में लगी पाठ्य-पुस्तकों का मूल्यांकन करवाया था। जनवरी 1993 और अक्टूबर 1994 में पेश रिपोर्टों में कहा गया था कि भाजपा शासित राज्यों में लगी पाठ्य पुस्तकों के जरिये घोर साम्प्रदायिक विचारों को फैलाया जा रहा है। मध्यकालीन भारत को पूरी तरह से हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की दुश्मनी के रूप में दिखाया गया है। आधुनिक भारतीय इतिहास खण्ड में स्वाधीनता संग्राम को 20 पृष्ठों में ही निपटा दिया गया है। इसमें भी तीन पृष्ठ हेडगेवार के "महान योगदानों" पर ही खर्च हो जाते हैं। रिपोर्ट में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आवश्यक कदम उठाने की सिफारिश की गयी थी। जाहिर है एन.सी.ई.आर.टी. ने यह उपक्रम कांग्रेसी राजनीति के तकाजों को पूरा करने के लिए ही किया था। ठीक उसी तरह, जिस तरह आज यह भाजपाई राजनीति के तकाजों को पूरा कर रही है।

संघ परिवार का सर्वाधिक कोपभाजन इतिहास को ही बनना पड़ रहा है। यह भी अनायास नहीं है। दरअसल, वह इतिहास के महत्व को अच्छी तरह समझता है। उसे यह पता है कि यदि नयी पीढ़ी को वैज्ञानिक इतिहास दृष्टि से और फासिस्ट जमातों के काले इतिहास से परिचित कराया जायेगा तो एक दिन वे सिर्फ इतिहास की विषयवस्तु बन जायेंगे। यही डर उन्हें इतिहास पर टूट पड़ने के लिए बाध्य कर रहा है। ●

(पृष्ठ 25 का शेष)

झड़ी लगा दी थी। प्रमोद महाजन ने जयललिता की तुलना **'इतिहास में वर्णित विषकन्याओं'** और सोनिया गांधी की तुलना मोनिका लेविंस्की से की थी। मुरली मनोहर जोशी ने सोनिया गांधी को **सूपर्णखा** कहा था। जार्ज फर्नांडीज ने भी सोनिया गांधी के लिए अशोभनीय भाषा का इस्तेमाल किया था। करुणानिधि ने जयललिता को **"झगड़ालू औरत"** कहा तो शरद यादव ने सक्रिय महिलाओं को **"परकटी"** कहा था।

इतना तो तय है कि संस्कृति के दरोगाओं को स्त्री के सम्मान की चिन्ता बिल्कुल नहीं है। लेकिन यह बात भी उतनी ही सही है कि बाजार आजादी के जो मूल्य परोस रहा है, वे स्त्री की गरिमा को बहाल करने वाले नहीं हैं। यह आजादी नहीं, एक कारागार से दूसरे कारागार में कैद करना है। इस सच्चाई की समझ से ही स्त्री की वास्तविक मुकम्मल पहचान कायम करने और मानवीय गरिमा बहाल करने के रास्ते खुलेंगे। ●

WORK HARD

GET ECLAT

EDUCATION POINT

centre for higher and competitive education

Education Point is organising screening test for pre Engineering and pre Medical on the same pattern of FIITJEE

Scholarship to Top 25 Students in Each Batch

Application forms available from Ist week of March

FOR MORE DETAILS CONTACT :

IIIrd floor, Nirman Ambica Arcade, opp. Gomti Motors, I.T. Crossing, Lucknow

Mob. 98380 42775 E-mail : v_42775@usa.net